

सूदाकरण

जल तथा वायु के प्रभावों के सूदा की उपरी परत छट छट कर बह जाती है। जिससे सूदा अपरदन होता जाता है। अपरदन के सभी रूपों को सूदा का अपरदन होता है। अपरदन के इन विभिन्न परिस्थितियों या स्थूल सूदा जीवाणु और प्रादेशिक की विस्थापन करता है। फलतः मिट्टी का अपरदन और आसान होता जाता है। और जल्द ही D या R परत (संस्कृत) दिखाई देने लगता है। अर्थात् नग्न चट्टान दृष्टिगोचर होता है।

अतः स्पष्ट है कि ऐसे प्रदेशों में उर्वराशक्ति का ह्रास एवं बेजल मृदा का विकास होता है। जैविक उर्वरता असंतुलित हो जाती है। और फलतः मृदाकरण असंतुलित हो जाता है यह सभी पारिस्थितिक असंतुलन का एक अंग है। सूदाकरण मृदा सूदाकरण मृदागत जल स्तर का ह्रास होता है जिसके कारण वनस्पति और अन्य जीव जन्तु भी प्रभावित होते हैं। भारत के ICAR के अनुसार (Indic Council Ag. Research) के अनुसार भारत के 60% मिट्टी इस समस्या से ग्रसीत है। राष्ट्रीय परती मृदा विकास बोर्ड के अनुसार

मध्य भारत का 173 मिलियन हेक्टेयर भी इस समस्या से ग्रसित है जो. छज्जला के अनुसार 150 मिलियन हेक्टेयर भी इस समस्या से ग्रसित है।

रसेल के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष

1/8 cm मिट्टी का लटाव होता है। जबकि जातक्य है कि 1 cm मिट्टी के निर्माण में 500 वर्ष लगता है। इस प्रकार मिट्टी कारण भारत के विश्व जमीर समस्या है।

यह अपरदन भारतीय क्षेत्रों में अलग x 2

प्रकार से अलग हुआ है जैसे -

1. अंत Sheet Erosion (चादरी अपरदन) - यह समस्या अकार्मिक वर्षा

के कारण मुख्यतः क्षेत्र तथा बालुका वनिय अमि में होता है। राजस्थान के अलावा प्रवाह क्षेत्र तथा लोही-नुमाहीत वाला क्षेत्र, अथवा गुम छोफि के क्षेत्र में इस प्रकार का अपरदन होता है। यह रासायनिक तटुकरण की ही क्रिया है जो सदैव भेगाडिक चट्टानों में देखा जाता है। गुम छोफि के कारण क्षेत्रों में चादरी अपरदन की क्रिया होती है यह समस्या मुख्य रूप से असम तथा दौलनागपुर क्षेत्र है जहाँ जनजातियाँ निवास करती हैं।

2. सिंक रिल & कूलिंग (अवनालिका अपरदन) - यह

वेस कालों में होता है जहाँ 'V' आकार की धाती का विकास नहीं होता है। वेस कालों में ही बाल परबल वाली नदियाँ एवं छोटी छोटी सरिताओं द्वारा मिट्टी का नीच अपरदन होता है। जिससे अंतुलितुया आहारी का

निर्माण होता है यह समस्या चंबल बेतवा और कनक नदी नदियाँ द्वारा लिया गया है। इन नदियों के

धाती के विकास नहीं होने के कारण ही संपूर्ण प्रदेश

में एक विशद स्थलाकृति का निर्माण होता है। इन

विशद क्षेत्र की लम्बाई 112 km और चौड़ाई 96

km है। यह M.P के मिजड तथा गुरेना की जिल

में तथा ज्वालियर में मुख्य रूप से हुआ है। लेकिन

सिहीटपुट रूप में विकसित होता हुआ काली और

ज्वालियर क्षेत्र में हुआ है।

~~Note~~ 361 लाख ^{हैक्टियर} मृमि संपूर्ण भारत में इसी कारण

बान उर्वर हो गई है।

3. वायु अपरदन - यह मुख्य रूप से मरुस्थलिय एवं

अर्धमरुस्थलिय तथा मैदानी भारत

की समस्या है। मरुस्थलिय क्षेत्रों में प्रभावशाली वायु

मिट्टी के नहिन कण, रूमी एवं ल्यूस का उड़ा ले जाना

है। मैदानी भारत में पशुओं की चराई के कारण

धास जड से उत्पन्न जाता है जिसके कारण मिट्टी कमजोर
 हो जाती है पुनः लुप्त होकर अर्धजैविक लुप्त हो
 वायु अपरदन का मुख्य कारण बन जाता है। इसमें
 लुप्त होकर खेतों को जल को छोड़ देता है जिससे
 मानव को पूर्व वर्षा इस मुद्दा को बहाल किया है।

4. पर्वतीय इलाके पर ट्रांस ह्यूमस Humus द्वारा
 आपने गेहूं एवं बलरियाँ के साथ गार्म के दिनों
 में उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में जाने से मुद्दा अपरदन
 की समस्या उत्पन्न होती है क्योंकि गेहूं एवं बलरियाँ
 पर्वतीय इलाकों पर कम समय वनस्पतियों को जड़ से
 उखाड़ देती हैं जिससे मिट्टी का बंधन बंधन
 खुल जाता है और यह कमजोर मिट्टी वर्षा होने
 पर जल के साथ स्थानांतरित हो जाती है। यह
 समस्या मुख्य रूप से हिमालय प्रदेश के गढ़ी
 जनजाति का तथा उ. ड. क. के गुज्जर जनजातियों
 द्वारा उत्पन्न की जाती है।

5. फसल चक्र - के पालन नहीं किए जाने के
 कारण भी तथा रसायनिक खाद
 एवं सी. सिंचाई के अव्यवहार उपयोग होने से मिट्टी
 की उपजाऊ शक्ति में कमी आती है। भारत
 की जिन क्षेत्रों में नहरों सिंचाई हुए हैं वे

सभी प्रथम दूरत शांति के काल में जैसे पंचायत
करवाया और परिवर्तन U.P. में है। इन कालों में
मिही के फलों में मगल की माला आदि का पाई जाती
है जिससे मिही आउट कर हो जाता है। और यही
कारण ऐसे कालों में अत्यधिक तीव्र गति से होता है।

6. नदियों के मार्ग बदलने के कारण — पूर्वी भारत
हजारों हेक्टर पर

मिही का उत्पादन हो रहा है जो नदियों पूर्व से परिवर्तन
की ओर धीरे धीरे रिवर्स कर रही है विश्व की
के सर्वाधिक मार्ग परिवर्तित करने वाली नदी कोसी
है जिसने पिछले 200 वर्षों में पूर्णिया से सहायिया
पहुँच चुकी है। इसी प्रकार गंडक तलिय मिही
अपरदन के लिए विश्व प्रसिद्ध है।